साहित्य अकादेमी

पुस्तक लोकार्पण : देवनागरी लिपि आंदोलन का इतिहास

नई दिल्ली। 15 सितंबर 2017। साहित्य अकादेमी द्वारा सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'देवनागरी लिपि आंदोलन का इतिहास' (ले. रामनिरंजन परिमलेंदु) का लोकार्पण अकादेमी में आयोजित 'हिंदी सप्ताह' (15–21 सितंबर 2017) के दौरान 'राजभाषा मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत आज साहित्य अकादेमी के सभाकक्ष में प्रख्यात भाषाविद्, समाजशास्त्री, विचारक और भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष, डॉ. बी. बी. कुमार द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री परिमलेंदु जी ने पुस्तक का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक मेरे साहित्यिक जीवन की उपलब्धि है। लगभग 30–35 वर्षों की कठिन तपस्या से मैंने यह पुस्तक लिखी है। उन्होंने देवनागरी लिपि के महत्त्व को रेखांकित करते हुए महात्मा गांधी का एक वाक्य उद्धृत किया कि 'देवनागरी लिपि राष्ट्र लिपि होने योग्य है।' उन्होंने प्राथमिक स्रोत से प्राप्त तथ्यों को ही पुस्तक में जोड़ने की सूचना दी। अपने संक्षिप्त वक्तव्य में उन्होंने देवनागरी लिपि आंदोलन का प्रायः संपूर्ण इतिवृत्त प्रस्तुत करके रख दिया।

मुख्य अतिथि डॉ. बी. बी. कुमार ने कहा कि देवनागरी लिपि से मेरा गहरा जुड़ाव है। किसी भी लिपि से कटना उसमें लिखित अकूत साहित्य से कट जाना है। यही कारण है कि रोमन लिपि अवैज्ञानिक होने के बावजूद अस्तित्व में है। देवनागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। यह हमारी विरासत है और जब तक हमारे देश का अस्तित्व है यह अवश्य विद्यमान रहेगी। उन्होंने आगे कहा कि देवनागरी लिपि का जुड़ाव ब्राह्मी लिपि से है। चीन एवं जापान का पुराना साहित्य ब्राह्मी लिपि में ही है। दक्षिण पूर्व एशिया में ब्राह्मी लिपि के अनेक शिलालेख हैं। मैं नौजवानों का आह्वान करता हूँ कि वे आगे आएँ और शोध के माध्यम से नए तथ्यों और साहित्य को दुनिया के सामने लाएँ।

अंत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि परिमलेंदु जी ने देवनागरी लिपि आंदोलन का इतिहास लिखकर भाषाओं की रक्षा करने का पुनीत कार्य किया है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक के साहित्य को पढ़ने में देवनागरी लिपि महती सहायता कर सकती है। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।